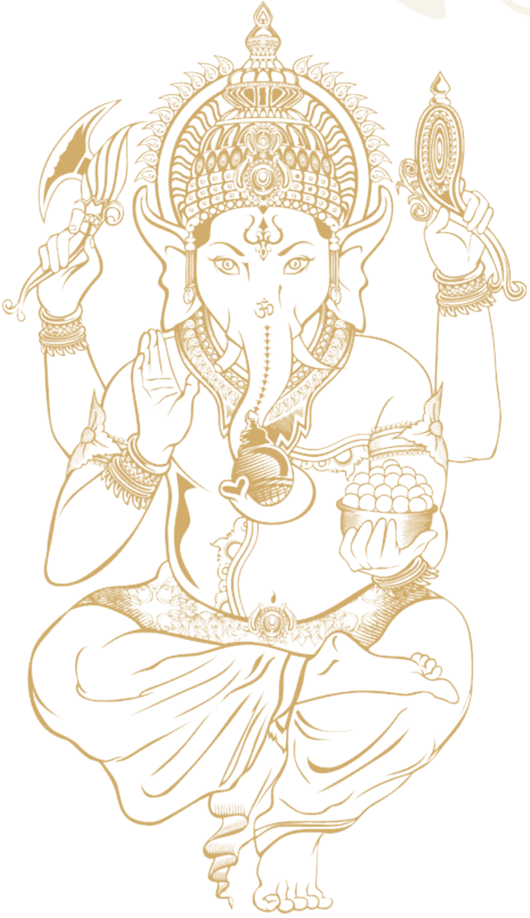

Jiyansh Thakur

15 Jun 2025

05:12 AM

Manali

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120266901

तिथि 15/06/2025 **समय** 05:12:00 **वार** रविवार **स्थान** Manali **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:47
अक्षांश 32:16:00 उत्तर **रेखांश** 77:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:20 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	22:24:44 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:00:32 घं	योनि	वानर
सूर्योदय	05:14:16 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	19:29:02 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	जलचर
शक संवत	1947	वर्ग	मार्जार
मास	आषाढ़	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	4	जन्म नामाक्षर	खी-खिलावन
नक्षत्र	श्रवण	पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
योग	ऐन्द्र	होरा	बुध
करण	बालव	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
चन्द्र 8वर्ष 0मा 17दि		मंगला 0वर्ष 9मा 20दि	
चन्द्र		मंगला	
15/06/2025		15/06/2025	
02/07/2033		05/04/2026	
	00/00/0000		00/00/0000
	15/06/2025		00/00/0000
राहु	02/06/2026		15/06/2025
गुरु	02/10/2027	भ्रामरी	15/07/2025
शनि	03/05/2029	भद्रिका	04/09/2025
बुध	02/10/2030	उल्का	03/11/2025
केतु	03/05/2031	सिद्धा	14/01/2026
शुक्र	01/01/2033	संकटा	05/04/2026
सूर्य	02/07/2033		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:21:22	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	---	0:00			
सूर्य			29:56:20	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	शत्रु राशि	1.47	आत्मा	पितृ	सम्पत
चंद्र			12:36:08	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	सम राशि	1.08	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			04:27:54	सिंह	मघा	2	केतु	चंद्र	मित्र राशि	1.64	कलत्र	भ्रातृ	वध
बुध			17:21:26	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	शुक्र	स्वराशि	1.05	अमात्य	ज्ञाति	विपत
गुरु		अ	06:56:55	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.38	ज्ञाति	धन	विपत
शुक्र			14:42:35	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.10	भ्रातृ	कलत्र	मित्र
शनि			07:03:42	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.18	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		28:11:36	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		28:11:36	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

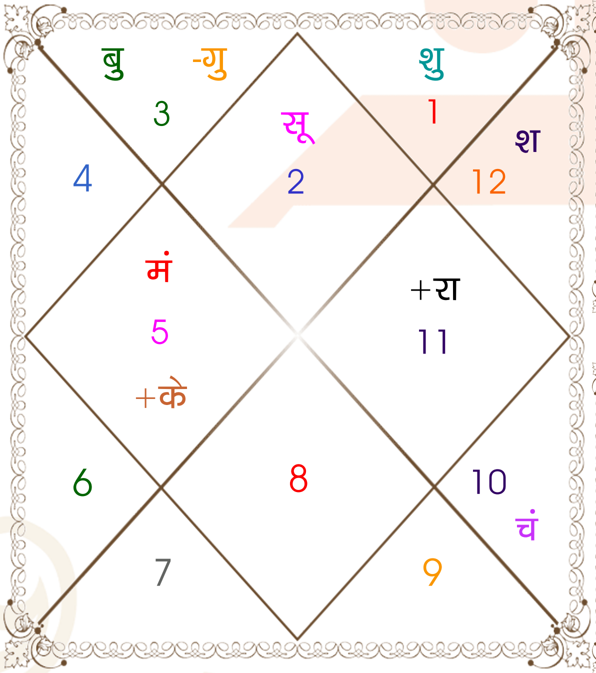

चन्द्र कुंडली

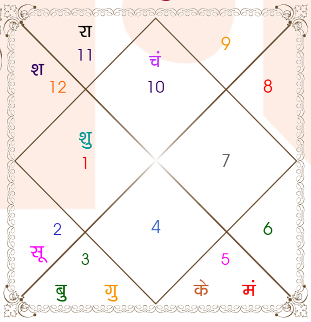

नवमांश कुंडली

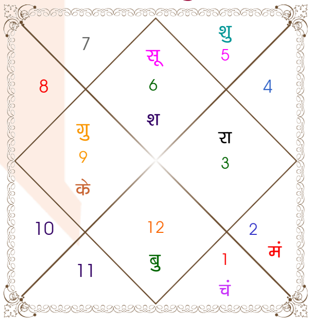

सर्वाष्टकवर्ग

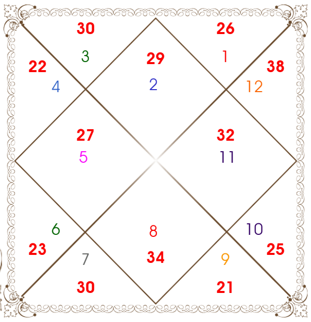

दशमांश कुंडली

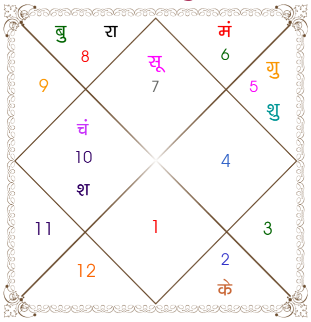

Maa Gayatri Jyotish Kendra
(NITIN SHARMA)
Jagatsukh, Tehsil Manali, District Kullu. Himachal Pradesh (175143).
9736005656
manalitoday@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, गण देव, योनि वानर, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खि" या "खी" अक्षर से होगा।

आप हमेशा शास्त्रों के अध्ययन में तत्पर रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आपके पुत्रों की संख्या कन्याओं की अपेक्षा अधिक रहेगी। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा एवं मित्रों से हमेशा सहयोग अर्जित करते रहेंगे। सज्जन पुरूषों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनको आप हमेशा हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके शत्रु हमेशा आपसे भयभीत रहेंगे तथा इन पर विजय प्राप्त करने में आप हमेशा सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मशास्त्र तथा पुराणों को श्रवण करने में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसके लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

आपकी देवता तथा ब्राहमणों के प्रति पूर्ण हादिक श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। आप एक धनाढ्य पुरुष होंगे तथा विपुल धन से सर्वथा युक्त रहकर जीवन में सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे। साथ ही स्वपरिश्रम तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का अनुपालन करने के लिए नित्य रूचिशील एवं प्रयत्नशील रहेंगे।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक श्रीमान व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। विभिन्न शास्त्रों का आप को विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा एक विद्वान के रूप में आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। आप एक उदार प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समाज के सभी वर्गो के प्रति इस प्रवृति का यत्नपूर्वक अनुपालन करेंगे। आप की पत्नी भी एक गुणवती एवं सुशील महिला होगी। अतः समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप

आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे।

श्रीमात्रछ्वणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप में स्वभाव से ही कृतज्ञता की भावना विद्यमान रहेगी एवं अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनका हादिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग भी इससे प्रभावित रहेंगे। आपकी संतति संख्या अधिक होगी तथा सर्वगुणों से सम्पन्न रहकर आप अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रुचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रुचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका कद ऊंचा होगा तथा मस्तक भी विस्तृताकार का होगा। आप में शारीरिक बल मध्यम रूप से रहेगा तथा आखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। संगीत में आप विशेष रुचि रखेंगे तथा परिश्रमपूर्वक इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे। शीत से आप अत्याधिक व्याकुलता का अहसास करेंगे एवं इसको सहन करने में असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा रहेगी एवं इसके पालन के लिए आजीवन यत्नशील तथा तत्पर रहेंगे। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे तथा दूर दूर

तक आपकी ख्याति भी व्याप्त रहेगी। कभी कभी आप अल्प मात्रा में क्रोध का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा अनावश्यक घृणा एवं द्वेष भाव से आप मुक्त रहेंगे। आपकी मित्रता अपनी आयु से अधिक आयु के लोगों के साथ में रहेगी। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील रहेंगे तथा कविता सृजन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। उत्साह के भाव से आप यक्त रहेंगे रहेगा तथा भाग्यबल से आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही सम्पन्न हो जाएंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने परिवार के लालन पालन में अधिकांश रूप से व्यस्त रहेंगे तथा दिखावे के लिए धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन करके उसका आचरण भी करेंगे। आपका कटिभाग भी पतला रहेगा। आपकी बुद्धि सरल होगी तथा अन्य लोगों की बातों को शीघ्र ही मान जाएंगे एवं उनके कहे अनुसार ही किसी कार्य को करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप में आलस्य का भाव भी रहेगा। अतः आपके कई कार्य धीरे धीरे सम्पन्न होंगे। भ्रमण तथा यात्रा आदि करने के आप विशेष शौकीन रहेंगे तथा आपका अधिकांश समय इस पर ही व्यतीत होगा। शारीरिक बल से आप सुसम्पन्न ही रहेंगे। आप अगम्य स्थानों पर जाने तथा कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। अतः सभी लोग आपके साहस से प्रभावित रहेंगे। आप कभी कभी हृदय से कठोरता का प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करेंगे। वात से उत्पन्न रोगों से प्रायः आप व्याकुल रहेंगे तथा इनसे आपको कई बार कष्टानुभूति होती रहेगी। इसके साथ ही सर्वप्रकार के सत्वगुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में इसका अनुपालन करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने कुल तथा परिवार की रीतियों तथा मर्यादा की वृद्धि करने में हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथापि परिवार में आप सामान्य मान सम्मान ही प्राप्त करेंगे। स्त्री के आप नित्य वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप को नाना प्रकार के शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः एक विद्वान के रूप में आप समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। महिला वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा वे सभी आपकी हादिक प्रशंसा करेंगी। आप पुत्र संतति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में इनसे पूर्ण सुख प्राप्त कर सकेंगे। भाइयों से आपका मधुर व्यवहार एवं स्नेह रहेगा अतः वे आपको अत्यन्त सम्मान प्रदान करेंगे। आप धन सम्पति से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे। आपके ह्दय में त्याग की

भावना भी नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इसका अनुपालन भी करेंगे। आपके सेवक भी सुन्दर एवं गुणवान होंगे तथा आदर पूर्वक आपके लिए सेवा कार्य करते रहेंगे। आप में दया का भाव भी रहेगा तथा दीन दुःखियो की आप यथा शक्ति सहायता करते रहेंगे। आपका परिवार विस्तृत रहेगा एवं सुख के प्रति आप नित्य चिन्तनशील रहेगे एवं उसकी प्राप्ति के लिए उचित उपाय भी करते रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन सम्पति को प्राप्त करेंगे तथा उसका प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। आप अन्य जनों के विषय में नित्य चिन्तित रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए यत्नपूर्वक कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। सलाह देने या मंत्रणा आदि के कार्य में भी आप दक्ष रहेंगे। अपने भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त बहादुरी के गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

संगीत शास्त्र के आप प्रमुख विद्वान होंगे तथा इसके क्षेत्र में ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता भी दर्शनीय रहेगी जिससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होगी। आप में काम भावना की प्रबलता रहेगी तथा कभी कभी इससे आप व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं उत्तम होगी तथा आप की बुद्धि सरलता से युक्त रहेगी। आप अपने विचारों का आदान प्रदान अत्यन्त सुगमता से सम्पन्न करेंगे तथा सुगमता से अन्य के विचारों को भी ग्रहण करेंगे। आप अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना भी पसन्द करेंगे। दूसरे के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा एवं स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वर्णित सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप युक्त रहेंगे एवं अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा एवं दानशीलता की भावना भी आप में

विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार यथा शक्ति इसका अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आप एक बुद्धि मान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए उत्सुक रहेंगे। अनावश्यक भौतिकता या दिखावे से आप दूर ही रहना पसन्द करेंगे। साथ ही समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में आप आदरणीय रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही चंचल स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को चपलतापूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। मीठे पदार्थो का भक्षण करना आपको अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। धन के प्रति आपके मन में विशेष लोलुपता रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही आतुरता का प्रदर्शन करेंगे। यदा कदा आप कलह आदि के लिए प्रेरित होंगे तथा समय समय पर अन्य जनों से परस्पर वाद विवाद होते रहेंगे। आप में कामभावना की भी प्रवलता रहेगी। आपकी सभी सन्ततियां बुद्धिमान एवं गुणवान रहेंगी। इसके साथ ही आप एक साहसी एवं वीर पुरुष भी होंगे तथा समय समय पर अपने साहस एवं वीरता का प्रदर्शन करते रहेंगे। घात या अशुभ समय

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरुष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविकयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का किसी योग्य सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होगे एवं अशुभ

फलों का प्रभाव भी समाप्त होगा।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Maa Gayatri Jyotish Kendra
(NITIN SHARMA)
Jagatsukh, Tehsil Manali, District Kullu. Himachal Pradesh (175143).
9736005656
manalitoday@gmail.com